शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन

डा. बलवीर सिंह जम्वाल
प्रिंसीपल
बी.के.एम.कालेज ऑफ एजुकेशन
बलाचैर, जिला शहीद भक्त सिंह नगर
पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

विश्ववन्द्य गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर का पूरा जीवन ही शिक्षा से ओतप्रोत है। उन्होंने जीवन और शिक्षण को कभी अलग नहीं माना। उनका शिक्षा के सम्बन्ध में मानना है कि जीवन से ही शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। जब महात्मा गांधी भारत वापस आये तो, उन्होंने शांति निकेतन में अपने शिक्षा संबंधी प्रयोग किये, जो नई तालीम के नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरुदेव को उनकी श्रेष्ठ कृति 'गीतांजली' को नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने रवींद्र संगीत की रचना की। प्रस्तुत शोध पत्र में रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अवलोकन किया गया है।

प्रस्तावना

बंगाल के प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री देवेन्द्र नाथ टैगोर के यहाँ 7 मई सन 1861 को जन्मे रवींद्रनाथ टैगोर अद्भुत प्रतिभा संपन्न महापुरुष थे। उनका परिवार सम्पन्न और सुशिक्षित था। देवेन्द्रनाथ टैगोर के जीवन का आधार साहित्य और दर्शन था। सम्पन्न घर में जन्म होने से रवींद्रनाथ टैगोर को सर्वप्रथम ओरिएन्टल स्कूल में दाखिल किया गया। वे क़ानून की पढाई के लिए इंग्लैंड गए, लेकिन बिना डिग्री लिए भारत वापस आ गए। वास्तव में रवींद्रनाथ टैगोर की स्वाध्यायी वृत्ति थी। उन्हें बंधी-बंधाई परम्परागत शिक्षा कभी रास नहीं आयी। उन्होंने आठ वर्ष की आयु से रचना करना प्रारम्भ कर दिया था। सोलह वर्ष की आयु में पहली लघु कथा लिखी। उनकी विद्वत्ता के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। उनकी प्रसिद्द कृति गीतांजली पर उन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे दुनिया के अकेले ऐसे कवि हैं जिनके लिखे गीत दो देशों के राष्ट्र गीत बने एक भारत और दूसरा बांग्लादेश।

तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने टैगोर को नाईट की उपाधि प्रदान की, लेकिन जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड से दुखी होकर उन्होंने इस उपाधि को अंग्रेज सरकार को लौटा दिया। रवींद्रनाथ टैगोर ने 22 सितम्बर 1921 को विश्वभारती नामक शैक्षिक संस्था की स्थापना की। इसका उद्देश्य पूर्व व पश्चिमी देशों के बीच समन्वय स्थापित करना था। उन्होंने विश्व भारती संस्था के उत्थान के लिए अपने जीवन के 20 वर्ष दिए। जब विश्व भारती आर्थिक संकट से जूझ रही थी, तब महात्मा गांधी ने अपनी ओर से साठ हजार रूपये का अनुदान दिया। गुरदेव की रूप में ख्यात रविन्द्रनाथ टैगोर दार्शनिक के साथ शिक्षा शात्री भी थे। 7 अगस्त

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

1941 में टैगोर जी ने इस संसार को सदा-सदा के लिए अलविदा कहा।

शिक्षा दर्शन

रूसो की तरह टैगोर भी प्रकृति को बालक की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हैं। टैगोर का मानना है कि प्रकृति मानव व अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों मे परस्पर मेल और प्रेम है। उनका कथन है कि सच्ची शिक्षा के द्वारा संसार की सभी वस्तुओं में प्रेम तथा मेेल की भावना विकसित होनी चाहिए। उनका यह भी मानना है कि प्राकृतिक वातावरण में प्राप्त शिक्षा वास्तविकता के करीब होती है, जिससे बालक को खुशी व ज्ञान दोनों ही प्राप्त होते हैं। उनका यह भी मानना है कि प्रकृति के पश्चात बालक को सामाजिक व्यवहार की धारा के सम्पर्क में लाना चाहिए और बालक को शिक्षा प्राप्ति के समय स्वतंत्र वातावरण मिलना आवश्यक है। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा का उदेश्य बालक को जीवन तथा विश्वस्तर के मिलन से पूर्णतया अवगत कराये तथा दोनों के मध्य सन्तुलन स्थापित करे।

शिक्षक के प्रति विचार

टैगोर ने शिक्षक को उच्च स्थान दिया है। उनका मानना है कि शिक्षा केवल शिक्षक के द्वारा ही दी जा सकती है, क्योंकि मानव-मानव से ही सीख सकता है। शिक्षण विधियों से कभी नहीं सीख सकता। शिक्षक को चाहिए कि वह बालक को जीवन की गति और मास्तिष्क के बन्धन से मुक्ति प्रदान करे। प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करे, दोनों शिक्षक और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करे। शिक्षक और बालक को सत्य की खोज और समान रूप से सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुसरण करना चाहिए। जीवन के सिद्वान्तों, मानव आत्मा की पवित्रता और व्यक्तिगत प्रेम में विश्वास शिक्षक को करना चाहिए न कि शिक्षण विधियों में। शिक्षा का कोई भी कार्य बालकों को हतोत्साहित करने वाला और रचनात्मक शक्ति का दमन करने वाला नहीं होना चाहिए। शिक्षक को क्रिया प्रदान ज्ञान बालकों के समक्ष रखना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों के साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करे।

पाठ्यक्रम के प्रति विचार

टैगोर जी बड़े दूरदर्शी थे। वह मानव जीवन का पूर्ण विकास चाहते हैं। इस उदेश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने मानव के मानसिक, चरित्रिक, आध्यात्मिक, नैतिक और शारीरिक विकास पर बल दिया और पाठ्यक्रम में साहित्य, प्रकृति अध्ययन, विज्ञान इतिहास और भूगोल आदि विषयों को शामिल करने का सुझाव दिया। शिक्षा संस्था में नाटक, मौलिक रचनाएं, शैक्षिक भ्रमण व अजायबघर के लिए विभिन्न वस्तुओं का सग्रंह होना चाहिए। इसके अलावा, छात्र-स्वशासन, खेलकूद व समाज सेवा आदि को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। सिलाई, बुनाई कढ़ाई बर्तन बनाना, कागज बनाना, खेती और व्यवहारिक विज्ञान, हस्तकला, चमड़े के कार्य आदि को पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया है। इसका मतलब है कि रवींद्रनाथ टैगोर तत्कालीन पाठ्यक्रम से सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने इसको दोषयुक्त माना तभी नये पाठ्यक्रम की रचना का सुझाव दिया। उनका पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान है।

शिक्षा दर्शन के मूल सिद्धान्त

रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन खुद किया है, क्योंकि वे बड़े दूरदर्शी थे, एक महान दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री थे। उन्होंने शिक्षा के सभी सिद्धान्तों की खोज खुद की, क्योंकि उन्हें शान्ति निकेतन में इसे व्यावहारिक रूप देना था। इन आधारभूत सिद्धान्तों का पालन विश्व भारती संस्था ने किया और व्यावहारिक रूप भी दिया। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मत है कि विद्यार्थी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

की शिक्षा शहर से दूर प्राकृतिक वातावरण में होनी चाहिए। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों को पुनः जीवित करना चाहिए। शिक्षा बालकों को भारतीय समाज और भारतीय विचारधारा की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। बच्चों में चित्रकला, अभिनय व संगीत का विकास करना चाहिए। बालकों को प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर प्रदान किये जाएँ।, बालकों की जन्म-जात शक्तियों का विकास करना, मानव को पूर्ण रूप् से विकसित करना चाहिए, शिक्षा का समुदाय के जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध होना चाहिए, शिक्षण विधि का आधार-जीवन प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितयाँ होनी चाहिए।

निष्कर्ष

रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महान दार्शनिक व शिक्षाशस्त्री थे । वे प्रकृति से बहुत ही प्रेम करते थे । उन्होंने कहा है कि "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है"। सर्वोत्तम शिक्षा वह है जो हमें सूचना तथा ज्ञान ही प्रदान नहीं करती अपितु हमारे जीवन का विश्व के समस्त जीवों के साथ मेल उत्पन्न करती है। टैगोर जी प्रकृति को प्रथम तथा समाज को उनके बाद मानते थे। उनका रूसो की तरह मानना था कि बालक के ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं होना चाहिए। बच्चा प्राकृतिक वातावरण में नगर व शहर से दूर शिक्षा गृहण करता है तो बालक अच्छा सीख सकता है। उन्होंने स्वाध्याय पर भी बल दिया है। वे बालक की शिक्षा के लिए प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। जिसमें बालकों को खुशी और प्रसन्नता के साथ ज्ञान भी मिलता है। प्रकृति और शिक्षा के समन्वय के सन्दर्भ में लिखा है कि "प्रकृति के पश्चात बालक को सामाजिक व्यवहार की धारा के सम्पर्क में लाना चाहिए। बालक प्राकृतिक वातावरण में जितना सीख सकता है वह किसी प्रकार के कठोर अनुशासन में नहीं सीख सकता।

सर्दभ ग्रन्थ

1 तिवारी उमेश (एन.डी.) प्रगतिशील भारत में शिक्षा आगराः ज्योति प्रकाशन

2 सक्सेना, सरोज (एन.डी.) शिक्षा के सिद्धान्त आगराः सहित्य प्रकाशन, आपका बाजार होस्पीटल रोड

3 चौहान आर. एस. (एन. डी.) शिक्षा एवं शिक्षण सिद्धान्त आगराः साहित्य प्रकाशन होस्पीटल रोड

4 मर्थी एस.के. (एन.डी.) फिलोसफिकल एण्ड सोसियोलोजीकल फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशन लुधियाणाः टंडन ब्रदर्स